छ0ग0 महिला सामाख्या सोसायटी

1. महिला हिंसा से संबंधित– (आप बीती कहानी)

(i). ग्राम चितालंका, जो हमारे दंतेवाड़ा ब्लॉक में स्थित है, जिला मुख्यालय से मुख्य मार्ग पर स्थित है । यह एक ऐसी लड़की की दास्ता बताने जा रहा है जो खुद तो दुनिया में नहीं रही पर सबके लिये प्रेरणा का स्त्रोत बन गई, नाम था सुखमती, उम्र करीब 20 वर्ष, सुनाई कम देता था और थोड़ी मंद बुद्धी थी । उसकी दो बहने और थी और एक भाई दोनों बहने अपनी मर्जी से शादी कर चले गई और उसके भाई–पिता का कोई पता नहीं । जिसका विवाह तो हुआ पर पति ने भी शारिरिक शोषण कर उसकी कमजोरियों के नाम पर वापस छोड़ दिया जहां छोड़ा वे उसके अपने तो थे पर अपनों के बीच भी वह सुरक्षित नहीं थी, स्वंय का चाचा वह भी हैवान निकला, अकेली देखकर वह रोज उसका शारिरिक शोषण करने लगा और सुखमति चुपचाप सहती रही, करती भी तो क्या न कोई कहने वाला था और न कोई सुनने वाला था, ऐसे में महिला सामाख्या की सहयोगिनी के साथ बठी गांव की महिलाएं जिन्हे देखकर वह भी बैठक में बैठी और सहयोगिनी द्वारा बताई जाने वाली बातो कों सुनने लगी ।

तब उसने अपनी बात संघ की महिलाओं को बताते हुए आप बीति सुनाई जो सबका दिल दहला देने वाली थी ऐसी घटना जिससे रिस्ते बदनाम होते हैं, एक दिन संघ की महिलाओं ने तय किया की वे उसके घर के आस–पास ही रहेगी यदि उसका हैवान चाचा उसके साथ कुछ करे तो वह चिल्लाकर शोर मचायेगी सूखमती ने भी वही किया और इस तरह उसकी यह हरकत बेनकाब हुई । पुलिस को खबर की गई, वह हैवान तो जेल चला गया पर दुःख इस बात का है कि लगातार शारिरिक शोषण का षिकार सुखमती अचानक बीमार पड़ी और अस्पताल में दम तोड़ दिया । उसकी मौत से महिलाओं का आत्मसम्मान जागा, उन्होने यह तय किय की वे भी उस आदमी को कभी जेल से बाहर नहीं आने देगी और इस तरह उनका साहस जागा, आज एक व्यक्ति के खिलाफ यह कदम कल हर एक महिला में अपनी सुरक्षा के संकेत के रूप में सामने आयेगा ।

(ii)- प्रेमबती सेठिया के फिल्ड टेकनार में संघ की महिलाओं द्वारा एक महिला मंगलबती को उसके पति द्वारा हमेशा ही शक कर मारपीट किये जाने पर संघ की महिलाओं ने इस मसले को सुलझाया और पूरे गांव के सामने यह निर्णय लिया कि अब यदि उसका पति ऐसा करेगा तो घर से वह महिला नहीं जायेगी बल्कि उसके पति को जाना होगा और गांव वाले उसे पूरे गांव में औरतो के कपड़े पहनकर मार-मारकर घुमायेगें ।

(iii) पत्नी को सामाजिक दर्जा दिलवायाः–

ग्राम पंचायत टेकनार से गंगू नामक व्यक्ति उम्र लगभग 35 वर्ष, पूर्व से विवाहित है जिसकी पत्नी का नाम भारती उम्र लगभग 30 वर्ष है। गंगू ने मुरे नाम 28 वर्ष की युवती से वैवाहिक संबंध स्थापित किया किन्तु रिति–रिवाजों के अनुसार पत्नी का दर्जा नहीं दिया और अब उसे किसी प्रकार का खर्च भी नहीं देता। मुरे द्वारा संघ की महिलाओं को अपनी स्थिति बताने पर संघ की महिलाओं ने यह निर्णय लिया की वे लोग तीनों को आमने–सामने बुलाकर समझौता कराते हुए मुरे का उसका हक दिलाने मंदिर में उसका विवाह कराएगें तथा तीनों को साथ रहने की सलाह भी देगें और यदि वे लोग मुरे को साथ रखने तैयार नहीं होगें तो उसे खर्च दिलवाया।

(iv) वृद्धा की मद्दः–

ग्राम पंचायत जारम में एक वृद्ध महिला है जिसका कोई नहीं है वह रोते–रोते बैठक में आयी और कहने लगी की मेरा कोई नहीं है मेरे पास कार्ड भी नहीं है मुझे अपने भोजन के लिए कमाना पड़ता है। उसके पूरे शरीर में जख्म है, हम लोगों ने उसे बीच में बैठाया और संघ की महिलाओं से इस समस्या का समाधान पूछा तो उन्होंने कहा कि इस गोटकुट्टा गांव में 68 घर है हम लोग इसे एक–एक दिन भोजन करवा सकते हैं इस बात से सभी महिलाएं खुश थे, हम सभी मिलकर इसे पाल लेगें।

2. स्वास्थ्य से संबंधित

(i) सहयोगिनी की मद्द से स्वस्थ बच्चे का जन्मः–

ग्राम पंचायत केशापुर में सहयोगिनी प्रमिला द्वारा एक गर्भवती महिला रूकमणी पति हिरालाल उम्र 24 वर्ष को केशापुर में उचित स्वास्थ सुविधा न होने के कारण जिला अस्पताल दंतेवाड़ा लाया गया यहॉ महिला की स्थिति नाजुक बतायी गई चूंकि बच्चा पहला था इसलिए उसे जगदलपुर मेडिकल कॉलेज रिंफर किया गया सहयोगिनी भी उनके साथ जगदलपुर गयी, जहॉ महिला ने 3.50 किलो स्वस्थ बच्चे को सामान्य तरीके से जन्म दिया।

(ii) सहयोगिनी की मेहनत रंग लाईः–

हमारे क्षेत्र में कार्यरत सहयोगिनीयां जिन्होने कुछ इस तरह अपने प्रयासों से अपने क्षेत्र में बदलाव देखा – सहयोगिनी प्रमिला कुंजाम जिसने अपने क्षेत्र के एक लड़के को जिसे घाव हो गया था, और वह उसी का बहाना बनाकर स्कूल नहीं जाता था, षिक्षक बहुत परेषान थे एक दिन सहयोगिनी ने उस बच्चे को स्कूल न जाकर बाहर घूमते देखा तो उसने अपनी साथी सहयोगिनी जानादई से इस विशय पर चर्चा की और दोनों ने मिलकर उस लड़के को समझाया और उसे अस्पताल लाया उसका इलाज करवाया और वह ठीक होकर अब रोज स्कूल जाता है जिस पर षिक्षकों को काफी प्रसन्नता हुई और सहयोगिनी के इस कार्य की सराहना उस बालक के परिवार द्वारा भी की गई यह बढ़ता हुआ वह कदम है महिला सामाख्या का जिसने आज एक बच्चे को स्कूल भेजा निष्चित ही हमारा विष्वास है कि एक दिन गांव का हर बच्चा स्कूल की सिढ़ियां चढ़ेगा ।

3. शिक्षा से संबंधित

(i) जहां चाहत हो पढ़ने की कुछ करने की वहीं इन्सान कुछ करता है, जिसे परवाह नहीं अभावों कीः–

ऐसी ही एक घटना ग्राम मटेनार में हुई, हमारी सहयोगिनी विमला जो स्वभाव से ही मिलनसार और हसमुंख है अपने इन्ही गुणों से महिलाओं का भी दिल जितने में उसे वक्त नहीं लगा जल्दी ही महिला सामाख्या की सोच जो उसने राज्य की संचालिका व अन्य प्रषिक्षक तथा अपने जिले के डी0पी0सी0 और डी0आर0पी0 से व अन्य सहयोगिनी ने सुना व सीखा, लोगो के बीच रखा और एक अच्छी पहल की शुरूआत हुई महिलाएं बैठक में तो आती है , पर बिना किसी साधनों के भी उन्होने पढ़ने की इच्छा जाहिर की और हमारे ही संघ की एक महिला कमली बी0ए0 पास है जो पूर्व में भी सतत् षिक्षा से जुड़ी रही उसने अपने गांव की महिलाओं को अपना वक्त देकर पढ़ने व लिखने के लिए प्रेरित किया और अब जब संघ की बैठक में महिलाएं आती है तो महिलाओं को अपना नाम लिखना सिखाती है तथा रोज वक्त निकालकर बैठती है आपस में बात करती व अक्षर ज्ञान भी सिखती जो यह संकेत देता है कि जब चाह हो दिल में तो न अभावों की परवाह होती है न ही वक्त का बहाना, बस हमको तो है कुछ कर दिखाना ।

(ii) खुलने लगी आंगनबाड़ीः–

ग्राम मंगनार जहां का आगनबाड़ी केन्द्र हमेषा बंद रहता, हमारी सहयोगिनी उस रास्ते से जब भी गुजरती तो देखा करती की यह आंगनबाड़ी हमेषा बंद रहता है उसने कारण जानना चाहा, वह आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से मिली मिलकर पता चला की बच्चे नहीं आते हैं तो हमारी सहयोगिनी ने कहा की आप केन्द्र तो खोलियें मैं भी आपके साथ घूमकर लोगो से कहुंगी कि वे अपने बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्र भेजे और फिर दोनों ने प्रयास किया, कार्यकर्ता अपने कर्त्तव्य से विमुख होना भी चाह रही थी पर महिला सामाख्या की सहयोगिनी की इस पहल पर कार्यकर्ता में थोड़ा डर भी आ गया क्योंकि हमारी सहयागिनी ने कहा यदि आप आंगनबाड़ी केन्द्र नहीं खोलोगी तो मैं इसकी सूचना जिले मे दे दूंगी, तो इस प्रकार कारण चाहे जो भी हो पर आंगनबाड़ी केन्द्र अब रोज खुलता है और बच्चे भी आते हैं जिसका श्रेय सहयोगिनी जानादई को हमने दिया और उसका यह कार्य अन्य लोगों के लिये भी प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा ।

(iii) स्कूल की उपस्थिति में वृद्धिः–

1. कलस्टर क्रमांक–4ः– सुखमती पोड़ियाम के द्वारा जारम पंचायत के गोलकुट्टा संघ स्थान में एक विद्यालय को देखा गया वहॉ के शिक्षक 5 या 6 बच्चों को लेकर बैठे रहते थे बाद में सहयोगिनियों ने पूछ की बच्चे क्यों नहीं आते तो शिक्षक ने कहा मैंने बहुत प्रयास किया है अगर आप मेरे साथ चले उनके परिवार वालों से बात करें, उनके द्वारा बच्चों के परिवार वालों से और संघ के बैठक में भी महिलाओं से बात किया गया की आप यदि बच्चों को स्कूल भेजेगें तो उनके जीवन में बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आज की स्थिति में स्कूल में बच्चे की उपस्थिति 50 के लगभग हो गये हैं।

(iv) सफलता की कहानीः–

(1) ग्राम डांगबुड़ा में 22/01/10 पटेलपारा की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा पोषण–आहार वितरण में भारी अनियमितता की जा रही थी जिसमें गर्भवती षिषुवती को नियमित **आहार** नहीं दिया जाना, केन्द्र समय पर न खोलना, बच्चों को मीनू के अुनसार भोजन न देना, केन्द्र में बच्चों को न पढ़ाना, ये सब बहुत दिनों से चला आ रहा था तब महिला सामाख्या की सहयोगिनी द्वारा महिलाओं के साथ बैठक किया गया जिसमें उन्होनें ने कहा कि कार्यकर्ता बहुत गड़बड़ी करती है हम लोग कुछ कर भी नहीं पाते। तब सहयोगिनी द्वारा संघ बनाकर सामूहिक रूप से उसके पास जाकर पूछना व चर्चा करने को कहा तब सभी महिलाएं उसके पास जाकर पूछने लगी। तो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा वह गुस्से में लाल पीली हो गई तथा सभी को गाली देने लगी व महिलाओं से कहा कि तुम लोग कोई अफसर हो जो मेरी पूछताछ कर रहे हो, तुम्हारा कोई पॉवर नहीं है मैं बड़े–बड़े अफसरों के साथ उठती बैठती हूँ। तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। एक महिला ने कहा कि **''हम वैसे ही बनाऐंगे तुम्हारा बच्चा मरे या बीमार पड़ें''** तथा सभी महिलाओं को बहुत गाली दी सहयोगिनी को भी गाली दिया तब सहयोगिनी ने डी0पी0सी0 को फोन करके सारा किस्सा बताया तब डी0पी0सी0 ने डी0आर0पी0 को भेजा तब दूसरे दिन डी0आर0पी0 ने सभी महिलाओं के साथ बैठक किया। वे डरी हुई थी उन्होने कहा कि क्या हम कुछ कर सकते है तब डी0आर0पी0 द्वारा बताया गया कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ने जो किया है वो गलत है उसने महिलाओं के साथ दुरव्यहार किया है अतः उससे चर्चा करनी होगी उसे बुलवाया गया वह बैठक में नहीं आयी कहा कि जिसे जरूरत है वह आयेगा मै नहीं जाऊंगी तब डी0आर0पी0 द्वारा आई0सी0डी0एस0 सुपरवाइजर को फोन द्वारा सूचना दी गई व दूसरे दिन बैठक रखी गई इसी बीच 2–4 व्यक्तियों ने डी0आर0पी0 को फोन द्वारा धमकाने की कोषिष भी की गई। लेकिन अगले दिन पटेलपारा के आंगनबाड़ी भवन में बैठक रखी गई आई0सी0डी0एस0 की सुपरवाइजर भी आयी तब इंदिरा से बात की गई महिलाओं ने उससे चर्चा की व बहुत आपसी बहस हुई। तब अंत में उनकी सुपरवाइजर द्वारा उसे चेतावनी दी गई कि आज के बाद ऐसा नहीं होना चाहिए उसने सब से मांफी व आगे से ऐसा न करने को कहा तथा महिलाओं ने उनसे यह भी कहा कि सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपने–अपने भवन मे मीनू चार्ट लगाऐंगे, नियमित केन्द्र खोलेंगें। इसके बाद बैठक खत्म हुई।

परिणामः–

1. महिलाओं को संघ की शक्ति का एहसास हुआ ।
2. महिला सामाख्या पर विष्वास हुआ।
3. महिलाओं को यह भी एहसास हुआ कि यदि हम मजबूत संघ में जुड़ जाते है व इसी प्रकार जानकारी मिलती रहे तो हम स्वयं ही अपनी सभी समस्याओं का हल कर सकते है ।

(v) आंगन बाड़ी का लाभ सबको मिलाः–

इसी तरह मेटापाल के नेलवट्टी ग्राम की आंगनबाड़ी की हमेषा बंद रहता था जब हमने वहां के लोगों से बात की तो उन्होनें कहा कि कभी–कभी ही यह केन्द्र खुलता है ऐसे हम ने सहयोगिनी से कहा की वह कार्यकर्ता से मिले व पूछे की आंगनबाड़ी केन्द्र न खुलने का क्या कारण है तो उसने अपनी समस्याएं तो बताई की आवागनमन का साधन नहीं है क्षेत्र बहुत संवेदनषील है जाने पर भी लोग अपने बच्चों को नहीं भेजते और यहां वह रहती थी पर उसके साथ कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिससे वह स्वंय को वहां सुरक्षित महसूस नहीं करती थी फिर हमारी सहयोगिनी ने कहा की वहां के लोगों की भी तो समस्या है सरकार यदि कोई लाभ पहुंचाना भी चाहती है और जिसके लिये यदि हमें चुना गया है और हम ही यदि इस तरह अपने फर्ज से पीछे हटेगें तो फिर कौन करेगा यह सब तो उसके भी यह बात समझ में आई और यही नहीं हमने उसकी सुपर वाईजर से भी बात की सबने कहा की समस्या तो है पर उसे जाना चाहिए और अन्ततः वह रोज आंगनबाड़ी केन्द्र जाती है और बच्चे भी आने लगे

4. पंचायत से संबंधित

(i) सरपंच पद पर विजयः–

ग्राम पंचायत पैगा में संघ की सदस्य ने प्रेरित होकर सरपंच के लिए खड़ा होने की इच्छा जाहिर की तब सभी महिलाओ ने उसे प्रोत्साहित किया और कहा कि बाकी लोग तो अषिक्षित है। तुम तो 10 वीं पढ़ी हो तब उसने अपने परिवार वालों से पूछा उन्होने सहमति जाहिर कर दी। तब संघ की महिलाओं ने ही टोली बना–बनाकर प्रचार–प्रसार किया तथा सभी ने सलमा को वोट करके जिताया। मतदान के समय केन्द्र में पर्ची काटने के लिए महिलाओं ने सहयोगिनी लीली को कहा तो इस पर सभी ने विरोध किया कि लड़की में इतनी हिम्मत कैसे कि इतने लड़कों के बीच में पर्ची काटेगी तो इस पर सहयोगिनी ने कहा कि जब महिला सरपंच पद के लिए खड़ी हो सकती है तो पर्ची काटने का काम क्यों नहीं कर सकती। तब सभी चुप हो गये।

सलमा एक्का ने जीतने के बाद सभी को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया व कहा कि संघ की महिलाएं यदि चाहे तो सोसायटी चलाने की जिम्मेदारी ले सकती है। चूंकि विजेता उरांव जाति की है अतः सभी ने कहा कि दस वर्ष सें कंवर का राज वो भी पुरूष था बहुत दिनों के बाद उरांव से जीते है वो भी महिला तो सभी महिलाओं को बहुत खुषी हुई।

(ii) महिला सामाख्या की सहयोगिनी ने दिखाई हिम्मतः–

मटेनार पंचायत का पेरमापारा गांव जहां बैठक में हमेषा महिलाएं यही कहती थी कि हमारे पास राषन कार्ड नहीं है बी0पी0एल0 कार्ड नहीं है, हमें विधवा पेंषन नहीं मिलती जैसी अन्य समस्याएं जो पंचायत से जुड़ी थी इस पर हमने सहयोगिनी को बताया की किसी को कुछ भी बताने से पहले हमे इसकी पूरी जानकारी लेनी चाहिए पहले आप सरपंच सचिव से मिलकर यह पता करो की ऐसी स्थिति क्यों है, तो सहयोगिनी सरपंच से

मिली सरपंच भी इस बात से अनजान था उसने सहयोगिनी के जाने के बाद, इस पर सचिव से बात की तो सचिव गुस्से से बौखलाया और पता करते हुए सहयोगिनी के घर तक लड़ने पहुंच गया की वह इस तरह से महिलाओं को क्यों भड़का रही है तभी सहयोगिनी ने भी हिम्मत दिखाई और बोला कि जो महिलाएं आपकी पंचायत में आई थी क्या उन्होने किसी गलत चिज की मांग की यदि सब मांगे सही है तो गलति आपकी है और यदि ऐसा ही रहा तो आज तो महिलाएं केवल पूछने गई थी एक दिन अपना हक छिन्न लेगी आपसे ।

(iii) राशन दुकान मुनाफे में चलने लगीः–

ग्राम पंचायत टेकनार में अखिलेश श्रीवास्तव व्यक्ति के द्वारा राशन दुकान चलाई जाती है। महिला सामाख्या का संघ बनने के पूर्व उसकी राशन दूकान घाटे में चलती थी। कारण यह था की सब अपनी मन मानी से राशन ले जाते थे जिससे हिसाब–किताब सही नहीं रहता था और सबको पर्याप्त राशन नहीं मिलता था किन्तु संघ की महिलाओं ने अब स्वयं जाकर राशन वितरण के दिन लाइन लगाकर सबके कार्ड जमा करके राशन वितरण करवाती है। जिससे उसकी राशन दुकान सही तरीके से चल रही है अब वह घाटे में भी नहीं है। जिससे प्रसन्न होकर उसने खुद संघ की महिलाओं को 100 रू. प्रतिमाह देना शुरू किया।

5. संघ से संबंधित

(i) खुद के लिये निकाला समयः–

ब्लॉक मुख्यालय दंतेवाड़ा से 7 किमी. की दूरी पर स्थित ग्राम पुरनतरई, जहां कभी महिलाएं बैठक में बुलाने पर नहीं आती थी, पर एक दिन महिला साक्षरता दिवस पर सहयोगिनी जानादई नाग की पहल पर करीब 8–10 महिलाएं दन्तेवाड़ा हमारे कार्यालय आई डी0पी0सी0 दीदी द्वारा उन्हें अपने कार्यक्रम के बारे में बताया गया उनकी बातो से प्रभावित महिलाएं जिनकी सोच कुछ इस तरह बदली की अब सहयोगिनी को उन्हें घर–घर बुलाने नहीं जाना पड़ता बल्कि वे खुद ही सहयोगिनी से पूछा करती है की अब कब बैठक होगा उन्हें बैठक में आकर सब की समस्या सुनने व उस पर विचार करने का मौका जो मिलता था, इस तरह आज अपनी रोज की दिनचर्या से समय निकालकर उन्होनें अपने लिये सोचना शुरू किया उनकी यह सोच निष्चय ही कल महिलाओं के हित में एक अच्छी पहल साबित होगी ।

(ii). संघ का निर्णयः–

ग्राम गोंदपाल जहां कुछ महिलाएं तो हमेषा बैठक में आती थी पर कुछ महिलाएं अरूचि दिखाती थी, हमारी सहयोगिनी हमेषा उन्हें बुलाती पर कुछ आती तो कुछ बहाना बना देती तब संघ की शेष महिलाओं ने यह निर्णय लिया कि जो बैठक में नहीं आयेगा वह दण्ड स्वरूप सारी महिलाओं को खाना खिलायेगा, इस निर्णय ने जैसे सब कुछ बदल

दिया, चाहे इसे संघ की कठोर निर्णय कहे या फिर लोगों का खाना खिलाने से डरना अब सारी महिलाएं बैठक में आती है ।

(iii) संघ की ओर बढ़ता रूझानः–

ग्राम पंचायत गंजेनार के पटेलपारा ग्राम की महिलाओं ने किषोरी बालिका जो स्कूल न जाकर गाय चराने का काम करती है उन्हें भी संघ की बैठक में बुलाकर संघ से जोड़ने का काम कर रही है ताकि वे आगे की समझ बना सके और जो स्कूल में यदि नहीं पढ़ पाई तो वे आगे चलकर महिला सामाख्या द्वारा संचालित षिक्षण केन्द्रों में पढ़ सके ।

(iv) केवल संघ की बैठक व अपनी बाते ही हमारा उद्देष्य नहींः–

हमारी सहयोगिनी प्रमिला लोगों की मदत करना पहले से ही जिसके स्वभाव में था, और महिला सामाख्या ने उसके इस स्वाभाव को और भी मजबूती प्रदान की उसने महलाओं को प्रसव के लिये अस्पताल तक भी पहुचांया, और हमेषा ही इस तरह के कार्यों में वो अपनी भागीदारी निभाती है, जिससे क्षेत्र की महिलाओं का विष्वास उस पर बना हुआ है जो हमारे लिये एक उपलब्धी है कि लोग विभागिय कर्मचारियों के होते हुए भी हम पर इतना भरोसा करती है ।

(v) केस स्टडीः–

मैं ग्राम टिकनपाल फील्ड में गयी थीं वहॉ स्वयं व महिला सामाख्या का उद्देश्य को बताते हुये बैठक लिया, यह प्रथम बार, इस बैठक में गांव की महिलाओं ने समस्या बताई– कि हम सभी महिलाऍ मछली पालन से संबंधित रोजगार काना चाहती है इसके लिए हमें क्या करना चाहिए ?

दुसरी बार में भी महिलाओं ने इसी समस्या को बताई, उनके द्वारा यह भी बताया गया कि मछली पालन व्यवसाय के लिए राशि 50000/रू. का ऋण निकला हुआ था, परन्तु शिकायत के चलते वह ऋण वापस चली गयी। तो इस पैसे को कैसे निकाले, क्या आप इस पैसे को दिलवासकते हो।

मैं बोली कि आप लोग इतनी महिलायें हैं और अपना ऋण नहीं निकलवा सकते। मैं अकेली हूं तो क्या बैंक मैनेजर मुझे दे देगा, क्या मैं जो बात बताऊंगी उस बात पर सभी सहमत होंगे ? तब मैंने बतायी कि सबसे पहले एक प्रस्ताव लिखना और उसे ग्रामसेवक को देना।

तीसरी बार गयी और उन्हीं महिलाओं से मिली जो मैं बतायी थी उसको लिख कर ग्राम सेवक के पास भेजे। उसके बाद ग्राम सेवक आये और उन्हीं महिलाओं से पूछे कि आप लोगों का कागजात कहॉ है, फिर महिलाओं ने अपना पूरा फाइल निकालकर दिखाए, महिलाऐं जो प्रस्ताव लिखे थे उसे लेकर ग्राम सेवक बैंक में गया, उनका खाता देखकर ग्राम सेवक खुश होकर महिलाओं को बताया कि 15 दिनों के अन्दर 50000/ऋण मिलने वाला है। महिलाओं ने खुश होकर बताया कि हमें 50000/रू. मिल गया है, और हम सभी

महिलाऐं मिलकर धंधा शुरू कर दिये हैं और हर महिला मूलधन और ब्याज भी जमा करते हैं। ये जानकारी तुमने दी तब ये पैसा मिला
सहयोगिनी–अंकलीन ध्रुव
ग्राम– टिकनपाल
कलस्टर नं.–04
ब्लाक–बस्तर

(vi) महिला को राशन कार्ड मिलाः–

मैं हर्राटोला गांव में सबसे पहली बार जनसंपर्क में गयी, दूसरी बार बैठक में जब वहॉ गई तब महिलाऍ फिर आई उसके बाद मेरी बात सूनी, राशन कार्ड के विषय में जो मैं बतला रही थी तो सभी महिला मेरी बात को अच्छी तरह से सुन रही थी तभी मेरी ध्यान एक महिला की ओर गई तो मैंने उससे कहा! बहन आप क्यों नहीं बोल रही है। आप इतनी उदास क्यों है ? फिर तीसरे बार जब मैं गई तो वो महिला फिर आई और बोली दीदी मेरा राशन कार्ड सरपंच ने ले लिया है । अब मैं उसके लिए क्या करूं तो मैं उससे और सभी महिलाओं से बोली की तुम सभी महिलाऍ मिलकर सरपंच के पास जाओ और कहना की सरपंच भैया मेरा कार्ड दे दो अगर सरपंच बोले की नहीं दूॅगा तो तुम बोलना क्यों भैया। मुझे अच्छी तरह से समझाओं फिर मैं चौथे बैठक में आऊंगी तो मुझे बताना। फिर मैं जब चौथे बैठक में गई तो मुझे वो महिला बताई की दीदी जब मैं और मेरी सभी महिला बहन सरपंच के घर जाकर बोले तो सरपंच भैया ने मुझे कार्ड दे दिया और मुझे राशन मिलने लगा।

(vii) गॉव वालों को सम्पूर्ण आहार दिलवायाः–

ग्राम पंचात पंडरीपानी, चना ढुंगारी में गांव आई और बैठक की, बैठक में 35 महिला आई और महिलाओं से बात की तो सबने कही की हमारे गॉव में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अच्छे से पोषण आहार नहीं देती हैं, तो मैं बोली की अभी गांव में तीन चार बैठक होने के बाद संघ बनाएंगे तो कुछ करेंगे। फिर मैं सबसे हस्ताक्षर करने को बोली तो आंगनबाड़ी की कार्यकर्ता अपने चेहरे को छूपा के बैठी थी। तो अचानक सब को हस्ताक्षर करने से मना कर दी। पॉच महिला ने हस्ताक्षर करी तो मैं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से बोली की आप गांव की महिलाओं को हस्ताक्षर क्यों नहीं करने दे रही है तो वो बोली की दीदी हम को तो पूरा आहार नहीं मिलता तो गांव वालों को क्या दें, मैं बोली की जब आप को आहार देने आएंगे तो आप गांव की महिलाओं को साथ में लेकर बोलना की हमको पूरा अहार दो नहीं तो हम नहीं लेंगे। तो बोली ठीक है। फिर उसने वहीं किया जो मैं बोली थी, फिर उनको पूरा समान मिलने लगा और गांव की महिला और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता खूश हो गई।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के नाम–सदम बाई।
सहयोगिनी का नाम रानिया बेगम।